9/7/2020

प्राकृतभाषा में निबद्ध गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद = 8 अङ्क

चतुर्थोऽङ्कः

प्राकृत

(क) प्रियंवदा – "हद्धी, हद्धी। अप्पिअं एव्व संवुत्तं। कस्सिं पि पूआरुहे अवरद्धा सुण्णहिअआ सउन्दला। ण हु जस्सिं कस्सिं पि। एसो दुव्वासो सुलहकोवो महेसी। तह सविअ बेअबलुबफुल्लाए दुव्वाराए गईए पडिणिवुत्तो।"

शब्दार्थ- हद्धी = हाय। हद्धी = हाय = (हा धिक्)।
अप्पिअं = अनर्थ(अप्रिय) = अप्रियं।

प्राकृत	हिन्दी	संस्कृत
(क) एव्व	हो ही	एव
(ख) संवुत्तं	गया	संवृत्तम
(ग) कस्सिं	किसी	कस्मिन्
(घ) पि	भी	अपि
(ङ) ~~पूजार्हे~~ पूआरुहे	पूजनीय व्यक्ति के प्रति	पूजार्हे
(च) ~~अवरद्धा~~	अपराध कर दिया है	ऽपराद्धा
(छ) सुण्णहिअआ	हृदयहीन	शून्यहृदया
(ज) सउन्दला	शकुन्तला	शकुन्तला
(झ) ण हु	~~वस्तुत~~: नही वस्तुतः	न खलु
(ञ) जस्सिं	जिसमें	यस्मिन्
(ट) कस्सिं पि	किसी साधारण व्यक्ति के प्रति भी	कस्मिन्नपि
(ठ) एसो	यह	एष
(ड) ~~दुर्वासा:~~ दुव्वासो	दुर्वासा	दुर्वासाः
(ढ) सुलहकोवो	बहुत क्रोधी	सुलभकोपो
(ण) महेसी	महर्षि	महर्षि
(त) तथा	इसप्रकार	तह

प्राकृत = हिन्दी = संस्कृत 10/7/2020 पृष्ठसं०-3

(थ) सविअ = शापदेकर = शप्त्वा

(द) वेअबलुब्फुल्लाए = वेगबलोत्फुल्लया = वेगके बलसे युक्त (हिन्दी)

(ध) दुव्वाराए = अनिवार्य = दुर्वारया

(न) गईए = गति से = गत्या

(प) पडिणिवुत्तो = लौटेजारहे हैं = प्रतिनिवृत्तः।

समस्त गद्यांश (प्राकृत भाषा में निबद्ध)
का हिन्दी अनुवाद –

प्रियंवदा – हाय! हाय! अनर्थ हो ही गया। किसी पूजनीयव्यक्ति के प्रति ~~शून्य~~ हृदय से रिक्त शकुन्तला ने कुछ अपराध करदिया है। ~~(सम्भ~~ वास्तव में किसी साधारणव्यक्ति के प्रति नहीं। यह हैं अतिक्रोधी महर्षि दुर्वासा। इसप्रकार (शकुन्तलाको) शाप देकर वेगके बल से युक्त (अति तीव्र) और अनिवार्य गति से लौटेजारहे हैं।

((वस्तुनिष्ठ और दीर्घउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर भी दिएजासकते हैं।))

(ख) अनसूया –

"को अण्णो हुदवहादो दहिदुं पहवदि। गच्छ। पादेसु पणमिअ णिवत्तेहि णं जाव अहं अग्घोदअं उवकप्पेमि।"

प्राकृत = हिन्दी = संस्कृत

(क) को = कौन = को

(ख) अण्णो = अन्य (~~अतिरिक्त~~) = ऽन्यो

(ग) हुदवहादो = अग्नि = हुतवहाद

(घ) दहिदुं = जलाने में (के लिए) = दग्धुं

~~(ङ) बहवदि~~ =

(ङ) पहवदि = प्रभावित करता है = प्रभवति

(च) गच्छ = जाओ = गच्छ

(छ) पादेसु = चरणों में = पादयोः

(ज) पणमिअ = प्रणाम करके = प्रणम्य

11/7/2020

(झ) प्राकृत — हिन्दी — संस्कृत

णिवत्तेहि णं = लौटाकर ला उनको = निवर्तयैनं

(ञ) जाव = तबतक = यावत्

(ट) अहं = मैं = अहम्

(ठ) अग्घोदअं = अर्घोदकम् (संस्कृत) = अर्घ्य और जल (हिन्दी) (पूजा के लिए सामग्री)

(ड) उवकप्पेमि = तैयार करती हूँ = उपकल्पयामि

हिन्दी अनुवाद →

अनसूया - अग्नि के अतिरिक्त अन्य (दूसरा) कौन जलाने के लिए समर्थ हो सकता है? (अविलंब) दौड़कर जा तथा (उनके/महर्षि दुर्वासा) चरणों में प्रणाम करके उनको लौटाकर ला, तब तक मैं अर्घ्य तथा जल (पूजा के लिए सामग्री) निर्माण करती (पूर्ण करती) हूँ।

(ग) प्रियंवदा —

"जदा णिवत्तिदुं ण इच्छदि तदा विण्णविदो मए। भअवं, पढम त्ति पेक्खिअ अविण्णादतवप्पहावस्स दुहिदुजणस्स भअवदा एक्को अवराहो मरिसिदव्वो त्ति।"

प्राकृत — हिन्दी — संस्कृत

(क) जदा — जब — यदा

(ख) णिवत्तिदुं = लौटने को उद्यत (तत्पर) = निवर्तितुं

(ग) ण इच्छदि = नहीं इच्छा करते = नेच्छति

(घ) तदा = तब = तदा

(ङ) विण्णविदो = निवेदन (प्रार्थना) किया गया = विज्ञापितो

(च) मए = मेरे द्वारा = मया

प्राकृत - हिन्दी - संस्कृत

13/7/2020 पृ०सं०-5

(छ) भअवं = भगवन् = भगवन्

(ज) पढमं = पहला = प्रथम

(झ) इत्ति = यह (ऐसा) = इति

(ञ) पेक्खिअ = जानकर = प्रेक्ष्य

(ट) अविण्णादतवप्पहावस्स = तप के प्रभाव को नहीं जाननेवाली
= अविज्ञाततपःप्रभावस्य

(ठ) दुहिदुजणस्स = आपकी पुत्रियों का = दुहितृजनस्य

(ड) भअवदा = आप = भगवता

(ढ) ~~एक्को~~ एक्को अवराहो = ~~एको~~ एक अपराध
= एकोऽपराधो

(ण) मरिसिदव्वो = क्षमा कीजिएगा = मर्षयितव्य इति।

हिन्दी अनुवाद -

प्रियंवदा - "जब वे (दुर्वासा) लौटने को उद्यत न हुए तो मैंने प्रार्थना की - भगवन्, (आपके) तप के प्रभाव (शक्ति) को न जाननेवाली आपकी पुत्रियों का यह प्रथम अपराध है, यह जानकर, आप इस एक अपराध को क्षमा कीजिएगा।"

(घ) प्रियंवदा - "तदो ण मे वअणं अण्णहाभविदुं अरिहदि, किंदु अहिण्णाणाभरणदंसणेण सावो णिवत्तिस्सदि त्ति मन्तअन्तो एव्व अन्तरिहिदो।"

प्राकृत - हिन्दी - संस्कृत

(क) तदो - इसके बाद - ततो

(ख) ण मे - नहीं मेरा - न मे

(ग) वअणं - वचन - वचनम

(घ) अण्णहा भविदुं - अन्यथा (असत्य) होने के लिए - अन्यथा भवितुं

(ङ) अरिहदि - हो सकता - अर्हति

(च) किंदु - किन्तु - किं

(छ) अहिण्णाणाभरणदसणेण - तुम्हारे पहचान के लिए आभूषण के दर्शन से - त्वभिज्ञानाभरणदर्शनेन

(ज) सावो - शाप - शापो

(झ) णिवत्तिस्सदि - समाप्त हो जाएगा - निवर्तिष्यत

(ञ) त्ति - इति - यह (ऐसा)

(ट) मन्तअन्तो - विचार देते हुए - मन्त्रयमाण

(ठ) एव्व - ही - एव

(ड) अन्तरिहिदो - अन्तर्धान (लुप्त/गायब) हो गए - अन्तर्हितः

प्रियंवदा (महर्षि दुर्वासा के कथन को व्यक्त करती हैं) -

" मेरी वाणी असत्य नहीं हो सकती, किन्तु तुम्हारे पहचान के आभूषण के दिखाने से मेरा शाप समाप्त हो जाएगा' - यह विचार देते ही वे (दुर्वासा ऋषि) अन्तर्धान (लुप्त) हो गए।